पाठ- 5 : रहीम

मूल भाव- कवि रहीम भक्तिकाल और रीतिकाल के मिलन बिंदु पर हैं। उन्होंने भक्ति, नीति और श्रृंगार का बहुत सुंदर निरूपण किया है। वे विशेष रूप से अपने नीतिपरक दोहों के लिए विख्यात हैं। रहीम को लोक-व्यवहार का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनके लिखे दोहे कहावतों और लोकोक्तियों का रूप ग्रहण कर चुके हैं। तभी तो रहीम का काव्य बहुत लोकप्रिय है। छंदों में उन्हें दोहा, सोरठा तथा बरवै अधिक प्रिय है।

रहीम को लोक-संस्कृति, लोक-व्यवहार तथा शास्त्रों का गहरा ज्ञान था। उन्होंने इस ज्ञान को सामान्य भाषा में बड़ी सहजता के साथ अपनी कविता में व्यक्त किया है। वे साधारण मनुष्य के दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बातों को आसानी से समझा देते हैं। सूक्ष्म अवलोकन, शास्त्र ज्ञान और सहज अभिव्यक्ति उनकी निजी विशेषता है। इस पाठ में 7 दोहों, 1 सोरठा और 2 बरवै का विवेचन किया गया है।

मुख्य बिंदु

खेल में प्यादे की चाल सामने की ओर के सीधे खानों में एक-एक खाने की होती है तथा वजीर सीधे और तिरछे (आड़े) खानों में कितनी भी दूरी तक चल सकता है। यदि कोई प्यादा वज़ीर के खाने तक पहुँच जाए तो वह वज़ीर के समकक्ष हो जाएगा तथा उसी की चाल चलने लगेगा।

रहीम कहते हैं कि दीपक की और परिवार में उत्पन्न कुपुत्र की गति एक समान होती है। जिस प्रकार दीपक के 'बालने' पर प्रकाश फैलता है अर्थात वह प्रसन्नता का कारण होता है और 'बढ़ जाने' पर अँधेरा हो जाता है अर्थात वह व्यक्ति को असमर्थ और असहाय बना देता है और इस तरह दुख का कारण बन जाता है।

रहीम कहते हैं कि आँखों से आँसू निकल कर व्यक्ति के हृदय के दुख को व्यक्त कर देते हैं और वे करें भी क्यों नहीं, जब किसी को घर से निकाला जाएगा तो वह घर का भेद तो दूसरों तक पहुँचाएगा ही।

रहीम कहते हैं कि वैर अर्थात शत्रुता, प्रेम, किसी कार्य को करने का कौशल तथा यश व्यक्ति के जन्मजात गुण नहीं होते और नही अल्प समय में प्राप्त भी नहीं होते हैं, बल्कि ये धीरे-धीरे ही बढ़ते हैं अर्थात केवल निरंतरता से ही इनका विकास होता है।

शतरंज के खेल में प्यादे की चाल सामने की ओर के सीधे खानों में एक-एक खाने की होती है तथा वजीर सीधे और तिरछे (आड़े) खानों में कितनी भी दूरी तक चल सकता है। यदि कोई प्यादा वज़ीर के खाने तक पहुँच जाए तो वह वज़ीर के समकक्ष हो जाएगा तथा उसी की चाल चलने लगेगा।

रहीम कहते हैं कि दीपक की और परिवार में उत्पन्न कुपुत्र की गति एक समान होती है। जिस प्रकार दीपक के 'बालने' पर प्रकाश फैलता है अर्थात वह प्रसन्नता का कारण होता है और 'बढ़ जाने' पर अँधेरा हो जाता है अर्थात वह व्यक्ति को असमर्थ और असहाय बना देता है और इस तरह दुख का कारण बन जाता है।

रहीम कहते हैं कि आँखों से आँसू निकल कर व्यक्ति के हृदय के दुख को व्यक्त कर देते हैं और वे करें भी क्यों नहीं, जब किसी को घर से निकाला जाएगा तो वह घर का भेद तो दूसरों तक पहुँचाएगा ही।

रहीम कहते हैं कि यदि कोई मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाकर अमृत पिलाए तो वह मुझे स्वीकार नहीं हैं, जब कि प्रेम और सम्मान के साथ यदि कोई ज़हर भी प्रस्तुत करे तो मुझे उसे पीकर मर जाना अच्छा लगेगा। व्यक्ति को आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए। यदि किसी से उसका आत्मसम्मान छीन लिया जाए तो जीवन में कुछ भी नहीं बचता, फिर वह अमर होकर भी क्या करेगा और यदि, कहीं प्रेम और सम्मान मिलता है तो ज़हर पीने में भी नुकसान नहीं, क्योंकि जीवन में प्रेम से अधिक पाने को और कुछ भी नहीं है।

रहीम ने आतुरता से प्रिय की प्रतीक्षा में रत गृहस्थ नायिका के मनोभावों का वर्णन किया है। शाम हो चुकी है। नायिका के पति के घर लौटने का समय हो गया है। वह दिनभर के बिछुड़े अपने प्रिय से मिलने को आतुर है। उसका एक-एक पल प्रिय की आहट की प्रतीक्षा में है। यह आतुरता इतनी बढ़ चुकी है कि उससे घर के भीतर नहीं रुका जा रहा। वह बार-बार दिया जलाकर द्वार पर जाती है, पर सास और ननद के ताने के डर से रास्ते में बैठी अपनी सास और ननद तक पहुँचते-पहुँचते उसे बुझा देती है।

कृषक जीवन की सुंदर छवि प्रस्तुत की गई है। गृहिणी कहती है कि अपने हाथ में खुरपी लेकर पति के साथ काम करने जाऊंगी। साथ ही बारिश होने पर घर को छाने अर्थात मरम्मत करने का काम भी साथ-साथ करूंगी।

रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार मोतियों के हार के टूट जाने पर मोतियों को फेंका नहीं जाता बल्कि उन्हें बार-बार धागे में पिरोकर फिर से हार बना दिया जाता है; उसी प्रकार श्रेष्ठ लोगों तथा अपने लोगों (कुटुंबी, संबंधी, मित्र आदि) के रूठने या नाराज़ होने पर उन्हें हर बार मना लेना चाहिए।

रहीम कहते हैं कि वैर अर्थात शत्रुता, प्रेम, किसी कार्य को करने का कौशल तथा यश व्यक्ति के जन्मजात गुण नहीं होते और नही अल्प समय में प्राप्त भी नहीं होते हैं, बल्कि ये धीरे-धीरे ही बढ़ते हैं अर्थात केवल निरंतरता से ही इनका विकास होता है।

काम पड़ने और काम निकल जाने पर मनुष्य के व्यवहार में बदलाव आ जाता है और दैनिक जीवन में भी हम इसका उदाहरण देख सकते हैं। उदाहरण-विवाह में दूल्हे द्वारा सिर पर पहना जाने वाला एक प्रकार का मुकुट 'मौर' कहलाता है। विवाह में फेरे के समय उसे सिर पर धारण करते हैं और बाद में नदी में प्रवाहित कर देते हैं। अर्थात् उसका महत्व समाप्त हो जाता है।

रहीम कहते हैं कि दूसरों की भलाई करने वाले लोग महान होते हैं और उनका भी हमेशा भला होता है, कई लोग सहयोग के लिए खड़े हो जाते हैं। सामान्य जीवन से एक उदाहरण लेकर इसे पुष्ट किया गया है। मेहंदी बांटने वाले को मेहंदी का रंग अपने आप लग जाता है।

सराहना

- यद्यपि रहीम ने फ़ारसी और संस्कृत में भी काव्य-रचना की है तथा अरबी और तुर्की भाषा में अनुवाद किए हैं, पर वे ब्रज और अवधी भाषा की काव्य रचनाओं के लिए जनता के बीच अधिक जाने जाते हैं। ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले कवियों में तुलसी के बाद रहीम का नाम सबसे ऊपर है।
- आप यह जानें कि दोहे में **13-11-13-11** की यति से चार चरण होते हैं जबकि सोरठे में इसके उलटे अर्थात् **11-13-11-13** की यति से। बरवै छंद में **12-7-12-7** की यति से कुल चार चरण होते हैं।
- जब किसी बात को समझाने के लिए अपने आस-पास के क्रियाकलाप, लोक में प्रचलित कथाओं अथवा पौराणिक प्रसंगों से उदाहरण दिए जाते हैं, तो उन्हें दृष्टांत कहते हैं। रहीम ने अपनी कविता में दृष्टांतों का बहुत सटीक प्रयोग किया है।

अपना मूल्यांकन करें

क्या आप इससे सहमत हैं कि रहीम के नीतिपरक दोहे आज की पीढ़ी के लिए उपयोगी हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

'जो रहीम ओछो बढ़े, तौ अति ही इतराय' से क्या तात्पर्य है? अपने जीवन के अनुभव से सिद्ध कीजिए।

क्या आप मानते हैं कि काम पड़ने और काम निकल जाने पर लोगों के व्यवहार में बदलाव आता है? उदाहरण सहित लिखिए।

परोपकार का जीवन में क्या महत्व है? अपने जीवन से उदाहरण लेकर स्पष्ट कीजिए।